ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 9 अंक 9)

2019

दर्शन परिषद् (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
वरन् वै मधु विन्दति
स्थापना 1994

सम्पादक
जय प्रकाश शाक्य

दर्शन परिषद्
(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
पंजीयन क्रमांक 04/14/01/08825/06
email:mpcgdarshanparishad@gmail.com

पुरूषार्थ व्यवस्था के समसामयिक अर्थ सन्दर्भ

डॉ. सत्यनारायण देवलिया
जनरल फैलो (आई.सी.पी.आर.)
दर्शन शास्त्र विभाग
डॉ.हरिसिंह गौर वि. वि. सागर (म.प्र.)
ई–मेलः–dr.sndevliya7@gmail.com

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के चमत्कार के फलस्वरूप आज मनुष्य ने अपनी सुख सुविधा, स्वास्थ्य व लौकिक कल्याण के कई अत्याधुनिक साधन विकसित कर लिये है। यह मनुष्य की बौद्धिकता व संकल्प शक्ति का ही परिणाम है। विज्ञान की इस चरम प्रगति के युग में भी आज हम कई समस्याओं व संकटों से ग्रसित व भयभीत हैं। जिनमें प्रमुख हैं मनुष्य का चारित्रिक पतन जिससे भ्रष्टाचार, हिंसा, यौन उत्पीड़न, चोरी आदि की घटनाऐं साथ ही पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न समस्यायें, आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी, आदि आदि समस्यायें व संकट।

मनुष्य ने अपनी बौद्धिकता से जहाँ आज इतना भौतिक विकास किया है, वहीं ये समस्याऐं भी अपना विकराल रूप लेती जा रहीं हैं. ऐसा क्यों हो रहा है? इस पर भी हमें विचार करना चाहिए। चूँकि हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं अतः हम तार्किक दृष्टि से कही बात को ही उचित समझेंगे व स्वीकार करेंगे। या दूसरे शब्दों में कहें तो यदि हमें अपनी ज्ञान परम्परा का कोई प्राचीन सिद्धान्त ऐसा लगता है कि जिसमें मानव का सर्वांगीण कल्याण निहित है व वर्तमान उत्पन्न समस्याओं व संकटों का निदान भी उसमें निहित है, और जिसे आज पूरी तरह अपनाया नहीं जा रहा हो तो हमें उस सिद्धांन्त को पुर्नस्थापित करने के लिए लोगों को उसके प्रति सचेत करने के लिए आज के परिप्रेक्ष्य में उसकी वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करनी पड़ेगी। भारतीय दर्शन में मानवीय कल्याण की एक बहुत प्राचीन अवधारणा है. पुरूषार्थ व्यवस्था की अवधारणा । यहाँ पर हम पुरूषार्थ व्यवस्था के समसामयिक अर्थ सन्दर्भ जानने का प्रयास करेंगे।

भारतीय दर्शन के साथ–साथ विज्ञान की भी यह मान्यता है कि संसार में कोई भी वस्तु अकारण नहीं होती और संसार में कोई भी वस्तु निष्प्रयोजन भी नहीं होती है। यदि इस सिध्दांत को स्वीकार किया जाए तो हमें यह मानना पढ़ेगा कि मनुष्य का जन्म भी अकारण नहीं है और मनुष्य का जन्म निरूद्देश्य भी नहीं है। भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने जीवन के अस्थायित्व को ध्यान में रखते हुए मानव होने के प्रयोजन या उद्देश्य पर भी विचार किया। किस वस्तु की प्राप्ति में मनुष्य को अपनी शक्ति व्यय करना चाहिए। या इस संसार